भद्रबाहु और कल्पसूत्र

संक्षिप्त जैन इतिहास

DELHI

लेखक मुनि माणिक

प्रसिद्ध कर्त्ता

ला॰ बिहारीलाल गिरिलाल जैनी

बिनौली वाले

मु॰ बड़ौत और बिनौली ज़ि॰ मेरठ

वीर सम्वत् २४४१

प्रथमावृत्ति ५०० प्रति सन् १९१५

मूल्य =)

Printed by P. Magni Ram at the Dharma Press Meerut city

आवश्यक सूचना

—:><:—

विहार के कारण विना फ़र्मा शोधे छप जाने से लग़ज़ियां रह गई हैं और ग़लतियों से अर्थका अनर्थ हो जाता है इस लिये अन्त का शुद्धि पत्र देख कर वाचक ग्रंथ पढ़ें और ग्रन्थ का रहस्य समझें।

कल्पसूत्र और भद्रबाहु इतने प्रसिद्ध हैं कि उन की प्रसिद्धि देनी सोने पर गिलेट चढ़ाना है किंतु जैनतत्व से विमुख भ्राताओं के हितार्थ यह ट्रैक्ट निकाला है और आप लोग इसको, पढ़ कर स्वयं कल्पसूत्र पढ़ें समय मिलेगा तो भद्रबाहु की जीवनी भी देने में आवेगी किंतु छोटे ट्रैक्ट में वह अभिलाषा पूर्ण नहीं होती इतिहास और मुक्ति वांछक पुरुषों को कल्पसूत्र एक अमृत रस का कूप है उसका सरल हिंदी छपाने के लिये ५०० रुपये की आवश्यकता है जो कोई महाशय कुछ भी मदद देने को चाहें सो प्रसिद्ध कर्त्ता को लिखें और काम शुरू करवावें।

मु[redacted] माणिक

बड़ौत सन् १९१५

भद्रबाहु और कल्पसूत्र

संक्षिप्त जैन इतिहास

—>-:o:-<—

जैन लोगोंमें श्वेताम्बर दिगम्बर दो फ़िरके हैं और वर्तमान समय में राजपूताना वग़ैरह देश छोड़ कर प्रायः सब जैन व्यापार में लगे हैं और व्यापार में कुशल होने से धनाढ्य भी हैं और दानवीर होने से प्रायः दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। सेठ प्रेमचन्द रायचन्द को वलायत वाले भी अच्छीतरह से जानते हैं जिस ने अमेरीका की लड़ाई के समय रुई ख़रीद कर क्रोड़ों रुपये थोड़े समय में प्राप्त किये थे और फिर क्रोड़ों रुपये दान में भी दिये हैं सारे भारत वर्ष में उस की स्कोलरशिप दी जाती हैं तथा उसने धर्मशालायें और स्कूलों के मकान तक बनवाये हैं वे कार्य आज उस के मृत्युवश होने पर भी उस यशस्वी की जीवित कीर्त्ति फैला रहे हैं।

वर्त्तमान काल में राय बद्री दास बहादुर वृद्ध मोजूद हैं जिन्होंने कलकत्ता के एक रमणीय जैन मन्दिर के बनाने में बेशुमार धन लगाथा है संमेत शिखर पहाड़ पर पारसनाथ की टोंक आज भी नई मोजूद है।

तीन सौ वर्ष पहिले प्रताप राणा के दुःख के समय में २५००० आदमी के बारह वर्ष तक युद्ध में पोषण के योग्य धन केवल अपने पास से देने वाला भामासा जैन ओसवाल आज भी इतिहास में प्रसिद्ध है।

आबू के मन्दिर को बनाने वाले विमलसा सेठ को दुनिया जानती है जिस ने सिर्फ़ आबू के मन्दिर में ही अठारह क्रोड़ रुपये लगाये हैं जिस में स्वर्ण चाँदी जवाहिर बिल्कुल नहीं लगाया है केवल सङ्गमरमर के पाषाण में बारीक नकशी का बढ़िया काम है दुनिया भर में प्रथम नंबर की एक ही इमारत भारतवर्ष की शोभा बता रही है जिस को बने लग भग १००० वर्ष हुवे हैं।

जैनिओं के तीर्थ प्रायः सब पहाड़ पर हैं जहां लाखों यात्री कार्त्तिकी और चैत्री पूर्णिमा पर इकट्ठे होते हैं भारतवर्ष में सब पहाड़ पर जैनिओं के नामांकित मंदिर हैं कितनेक पहाड़ आज भी जैनिओं के अधिकार में हैं जहां जाने के लिये जैनिओं की आज्ञा लेनी पड़ती है अकबर बादशाह ने सब धर्मों के गुरुओं को बुलाकर योग्य प्रश्न उनके धर्म के विषय में पूछ संतुष्ट होकर इनाम और जागीरें दी हैं ऐसे ही जैनिओं के धर्मगुरु हीरविजय सूरिको गुजरात खंबात से बुलाकर जैनधर्म के तत्वों को पूछकर संतुष्ट होकर जागीर देने लगा किन्तु जैनसाधु पैसे किंवा स्त्री से विरक्त होते हैं इस लिये जागीर किंवा द्रव्य नहीं लिया बादशाह की बहुत प्रार्थना होने पर पवित्र दिनों में जीवहिंसा बंद करादी थी और जैन तीर्थों की जगाये जैन संघको दिलवादीं और नियम करा दिया कि वहां जाकर कोई भी जैनेतर किंवा बादशाही लशकर जैनधर्म विरुद्ध कृत्य न करे।

आज जैनियों की संख्या प्रायः तेरह लाख के भीतर है और उन में श्वेताम्बर दिगम्बर दोनो अपनी उन्नति के लिये योग्य उपाय ले रहे हैं उस श्वेताम्बर आम्नाय में भद्रबाहु और

कल्पसूत्र प्रसिद्ध हैं जैनियों की ऐतिहासिक स्थिति जानने को मागधी भाषा का यह ग्रन्थ प्रसिद्ध है अंग्रेज़ी में और हिन्दी गुजराती में उसका भाषांतर होचुका है हरमनजेकोबी ने उस ग्रन्थ पर बहुत विवेचन किया है और मागधी भाषा का पूर्व की अनुसार विशेष प्रचार न होने के कारण इस कल्पसूत्र का रहस्य समझ में नहीं आता था इस लिये उसपर अनेक संस्कृत सरल टीकायें विद्वान् जैन साधुओं ने लिखी हैं उसमें से सुबोधिका, कल्पकिरणावली लक्ष्मी वल्लभी को आज कल संस्कृतज्ञ साधु विशेष पढ़ते हैं।

ईसाइओं में बाइबिल मुसलमानों में कुरान और जैनिओं में यह कल्पसूत्र अधिक माननीय है क्योंकि कल्प नाम साधुओं के आचार का है इसको किस तरह से पालन करना चाहिये यह बताने वाले ग्रन्थको कल्पसूत्र कहते हैं जोसाधु योग वहन (तपश्चर्या विशेष) किये हुवे हैं उन को इस ग्रन्थ के पढ़ने का और दूसरे साधुसाध्वियों को श्रवण करने का अधिकार था धीरे धीरे जब इस की अधिक मान्यता हो गई तब आनंद पुर (वडनगर गुजरात) नगर में राज पुत्र का शोक दूर करने को राजा की राज सभा में सुनाया था उस दिन से जैनी गृहस्थ भी सुनने लगे हैं भाद्रपदशुदि ४-५ के रोज जैन श्वेतांबर लोग बड़ी महिमा से श्रवण करते हैं किन्तु मागधी का अर्थ न समझने से उसके पहिले उसकी भाषा करके लोगों को साधु लोग सुनाते हैं श्वेतांबर साधु लोग चौमासे में एक जगह स्थित होते हैं उस को पर्युषणा कहते हैं और उसके लिये आषाढ़ शुदि १४—१५ से ५० दिन गिन कर यह सूत्र बांचते हैं किन्तु भाद्रपदवदी १२---१३ से

आठ दिन तक पर्युषणापर्व की महिमा होती है उस पर्युषणा पर्व में यह कल्पसूत्र सुनाया जाता है वैदिक चर्चा आने से विद्वान् ब्राह्मण भी सुनते हैं ॥

कल्पसूत्र में क्या विषय है

साधुओं को उपदेश देने वाले तीर्थङ्कर होते हैं वे इस भरत क्षेत्र में छे आरे में २४ थे वे पूर्व में अनन्त हुए हैं और भविष्य में अनन्त होंगे किन्तु वर्तमान काल के २४ तीर्थङ्कर हुए हैं उन के नाम नीचे लिखे हैं।

१ ऋषभदेव, [जिन को आदिनाथ ऋषभदेव भी कहते हैं) २ अजितनाथ, ३ सम्भवनाथ, ४ अभिनन्दन, ५ सुमतिनाथ, ६ पद्मप्रभु, ७ सुपार्श्वनाथ ८ चन्द्रप्रभु, ९ सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) १० शीतल नाथ ११ श्रेयांसनाथ १२ वासुपूज्य १३ विमलनाथ १४ अनन्तनाथ १५ धर्मनाथ १६ शांति नाथ, १७ कुन्थुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लीनाथ, २० मुनिसुव्रत, २१ नमिनाथ २२ नेमिनाथ (अरिष्टनेमि] २३ पार्श्वनाथ, २४ महावीर, । इस को वर्धमान भी कहते हैं इन २४ तीर्थङ्करों के वीच में जो अन्तर है वह उस कल्पसूत्र में बताया है और २४ तीर्थङ्करों का संक्षिप्त चरित्र भी उस में वर्णन किया गया है।

जैसे राज्यके नियम (क़ानून) प्रजा के लिये हैं इसी प्रकार साधुओंके लियेभी नियम(क़ायदे)हैं उन नियमों के अनुसार चलने से साधु के सदाचार की रक्षा होती है आज जैनेतर किंवा स्वयम् जैनियों में जैन साधुओं की विशेष मान्यता है और लोग उन की बड़ी इज्ज़त करते हैं क्योंकि वे पैदल फिरते हैं रोटी मांग कर

खाते हैं किसी जीव को त्रास नहीं देते इस लिये ५२ लाख बाबाओं को जो अपमान सहना पड़ता है वह उन को नहीं सहना पड़ता इस का कारण वही तीर्थंङ्करों का शासन है जैनी रोज़ कहते हैं कि ॥

सर्वमङ्गल मांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनंजयति शासनं ॥

इस ज़माने में जो साधु साध्वी हैं उन को महावीर प्रभुका शासन मानना पड़ताहै जो शासन महावीर प्रभुने पावापुरी जो पटना और गया के बीच में आज छोटासा ग्राम रहगया है वहां अन्तिम समय पर सुनाया और समाप्त कियाथा और मोक्षमें गये हैं अर्थात्‌वहां हस्तिपाल राजा की एक मोहररोंकी शाला (मकान विशेष) मेंनिर्वाण अर्थात् मनुष्य देह किंवा आठकर्मोंके वन्धनको मुक्तकर जन्ममरणसे रहितहोकर मुक्ति सिद्धि स्थानमें स्थित हुवे हैं

महावीर प्रभु को आज मोक्ष गये २४४१ वर्ष हुए हैं और उनका जन्म क्षत्रियकुण्डनगर में हुआ था जहां सिद्धार्थ राजा राज्य करता था उसकी त्रिशला देवी नाम की सुशीला रानी थी उस के एक पुत्र पहिले हुवा था जिसका नाम नन्दिवर्धन था जब दूसरा पुत्र हुआ तब उसका नाम माता पिता ने घर में सम्पदा इज्ज़तकी वृद्धि होती देखकर जिस वर्धमान नाम का उसके गर्भ में स्थित होने के समयमें रखने का संकल्प किया था वही नाम जन्मके बारवें दिनमें रखलिया किन्तु वह बाल्यावस्था में भी बड़े बहादुरी के कार्य करते थे जिस से महावीर नाम से विशेष प्रसिद्ध हैं जैनग्रन्थ में किंवा जैनगृहों में

निरन्तर वन्दे वीरम् शब्द विशेष प्रचलित है किन्तु साधुसमाज में उनका नाम श्रमण भगवान् महावीर विशेष प्रसिद्ध है क्योंकि साधुता रखनेके लिये दो चीज़की मुख्य आवश्यकता है=

१– अनुकूल इष्ट पदार्थ मिलने से रक्त होकर एक जगह बैठ न रहना और अहंकार न करना।

२ विरुद्ध दुखदाई पदार्थ मिलें अपमान होवे तो भी क्रोध प्रकट न करना न मन में दीनता लानी ये दो बातें महा वीर प्रभु में अधिक जानने योग्य और आदरणीय थीं।

महावीर प्रभु ने माता पिता के मरे बाद ३० वर्ष की उम्र में दीक्षा ली थी और उन के केवल एक पुत्री पत्नी और बड़ा भाई था उन को पूछ कर दीक्षा क्षत्रियकुण्डनगर के उद्यान में जाकर तीसरे पहर के समय ली थी दीक्षा के समय हज़ारों किंवा लाखों आदमी विद्यमान थे उन के सामने निम्नलिखित प्रतिज्ञा की थी।

करेमि, सामाइअं, सावज्जं, जोगं पच्चखामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए भकरेमि न कारवेमि करतंपि अन्नंन समणुज्जाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इस प्रतिज्ञा का रहस्य यह है कि मैं आज से यावत् जीवन कोई भी पाप का कार्य मन वचन और काया से न करूंगा न कराऊंगा न करने वाले को भला जानूंगा और अपने आत्मा को शरीर से भिन्न मान कर शरीर और शरीर के साथ लगी

हुई उपाधियें जो जड़ हैं उन का मोह छोड़ कर आत्मभावना में ख्याल रखूंगा शत्रु मित्र पर भी समभाव रखूंगा।

वह प्रतिज्ञा किये बाद संसारी संबंधी जो भाई कुटुंब वगैरह हैं उन को छोड़ कर दूसरी जगह गये और अनेक प्रकार के जो अनुकूल प्रतिकूल उपसर्ग (सुख दुःख) प्राप्त हुवे वे समताभाव से सहन किये ।

उस सहिष्णुता का वर्णन और महावीर प्रभुकी वीरता देख कर उनका नाम श्रमण भगवान् महावीर साधु लोग कहने लगे क्योंकि श्रमण नाम जो श्रमको विना खेद सहन करे उसका है वह उन्हों ने अच्छी तरह से बिना खेद सहन किया था

महावीर प्रभुको एक समय पर जो कष्ट आया है वह यह है कि कानमें लकड़ीकी बारीक कीलें बनाकर जो परस्पर मिल जावें इस प्रकार से एक गोपाल ने जो पूर्व जन्म का वैरी था लगाईं थीं उनको निकालने में इतना कष्ट उन्हें सहन करना पडा कि अनंत बली होनेपर भी मुंहमेंसे चिंघाड निकलने लगीं कहते हैं कि वो इतनी भयंकर थीं कि पहाडों तक उसकी गर्जना पहुंच गई थीं।

साधुओं के दश धर्म उन्हों ने पालन किये थे वह नीचे लिखे हैं।

क्षांति, आर्जव, मार्दव, तप, निर्लोभ, संयम, सत्य, शौच अकिंचन, ब्रह्मचर्य।

क्षमा में इतना कहना ही बस होगा कि चंदकौशिक दृष्टिविष सर्प सबको दृष्टि से ही जला देता था उस भीतिसे रास्ता बंद होगया था महावीर प्रभु ने सब जीवों का कष्ट दूर करने को

वहां जाकर सर्पके अनेक आक्रमण के कष्ट सहन कर तीन वख़ काटने परभी धैर्य रक्खा जिससे सर्पका क्रोध कुछ शान्त हुवा उस समय महावीर प्रभुने उस सर्प को समझाया कि हे चन्द्-कौशिक ! तैने पूर्व में क्रोध करके साधुता के बदले यह पशुत्व पाया है अब सर्प योनिमें क्रोध कर कौन अवस्था पावेगा ? वह यह सुनकर अत्यंत शांत होगया और जाति स्मरण ज्ञान प्रकटहोने से पूर्व जन्मको देखने लगा और क्रोधका भीष्म दुःख फल देख कर हाथ जोड़नेकी योग्यता न होनेसे मस्तक नमाकर शांत पडा रहा वीर प्रभु उसकी अंतिम अवस्था अच्छी रहने के लिये तीन दिन वहां खड़ेरहे क्योंकि सर्पको अधिक कष्ट आने वालेथे और उस कष्टमें जो क्रोध करता तो फिर दुर्दशा होती और दुर्गति में जाता जब सर्प ने किसीको न काटा तब उसमार्ग से लोग चलने लगे और सर्पका जाति स्वभाव छूट जानेसे लोग उसकी पूजा करने लगे तथा मार्गमें चलने वाली दूध वाली दूंध डालती थी घीवाली घी मक्खन वाली मक्खन डालने लगीं उससे अनेक कीडिओं ने वहां आकर घी दूध के साथ उसका कोमल शरीर भी काटना शुरु किया वह वेदना यहां तक बढ गई कि उसके संपूर्ण शरीर में छिद्र होगये किंतु जब क्रोध जराभी देखते कि महावीर प्रभु अमृत वचन से उस का क्रोध दूरकर देतेथे तीन दिन के बाद उसने अति कष्ट सहन कर देह त्याग किया और देवलोक में गया ऐसे अनेक दृष्टांत बता कर तथा स्वयं अपना प्राण वियोग होने पर्यंत भी उन्होंने धैर्यता न छोडी न किसी के ऊपर क्रोध किया किन्तु उस दुःख देने वाले को भविष्य में दुष्कृत्य से दुष्ट फल भोगने पड़ेंगे यह विचार करने से उनकी

करुणा दृष्टि से आंखों में आंसु आजाते थे जिस के विषय में कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने लिखा है कि-

कृतेऽपराधेऽपि जने कृपा मंथरतारयोः ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥

महावीर प्रभु ने उन कष्टों के सहन करने के साथ २ तप भी बहुत किया था उन्होंने १२ वर्ष साड़े छै महीने में केवल ३६ दिन भोजन किया था इस प्रकारका कष्ट सहन करके व्रत धारण करने से उनके मोह अज्ञान आदि सब नष्ट होगये और वह आत्मिक सुख को भोगने लगे अर्थात् सच्चिदानंद, ब्रह्म, सर्वज्ञ, साकार ईश्वर होगये यहांतक हुवा कि वह कभीभी किसी को धार्मिक उपदेश न देते थे परन्तु जब कैवल्यज्ञान प्राप्त हुवा तो प्राणिमात्र का ३ काल का वृत्तान्त जानने में समर्थ होगये और प्राणिमात्र के हितार्थ उपदेश दियो उन्हें वैशाषशुक्ल दशमी को कैवल्यज्ञान प्राप्त हुआ था वह स्थान जहां उन को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था गिरड़ी स्टेशन से करीब १० माइल की दूरी पर रज्जुवालिका नदी, जो वराटक नाम से प्रसिद्ध है उसके तट पर श्यामाक गृहस्थका खेत है आज वहां शान्त स्थान में १ रमणीय मन्दिर और धर्मशाला विद्यमान हैं और वह वहां थोड़ा सा उपदेश देकर महसेन वनमें आये थे वहां देवतों ने उनके लिये सभामण्डप बनाया था महसेन वन पटना और गया के बीचमें है जहां पर आज कल तालाव के भीतर जलमें रमणीय मन्दिर बना हुवा है जिस समय उन्होंने वहां उपदेश

दिया तब गुब्बरगांव में गौतम गोत्र वाला एक इन्द्रभूति नामका विद्या विशारद पंडित वैदिक यज्ञ कररहा था जिसके समीप दो भाई और अन्य विद्वान् ब्राह्मण भी थे उस इन्द्रभूति ब्राह्मण को उनके व्याख्यान की लोगों से महिमा सुन कर बड़ा दुःख हुआ और वह यह विचार कर कि मैं चौदह विद्या पारंगामी हूं मेरे सामने यह विना मेरी सेवाके कैसे प्रसिद्धि पाया है, अपने भाइयोंको साथ लेकर शीघ्र वाद विवाद करने को चल दिया और उनके पास गया महावीर प्रभुने उसको प्रसन्नमुख होकर बुलाया और वेद मन्त्रों से उसका भ्रम निवारण किया और वह उनके वेद वाक्यों से सन्तुष्ट होकर 'जीव शरीर से भिन्न तथा उस में हीहै, यह निश्चय कर पहिला मुख्य शिष्यहुआ तथा उसके साथके और दशों ब्राह्मणों ने भी वह अधिकार सुनकर क्रम क्रम से आकर अपनी शङ्कायें निवारण कीं और सब महावीर प्रभु के शिष्य होगये ।

उन बारहों को उन्होंने गणधर पदवी दी और उन बारहों के ४४०० चेलों ने भी दीक्षा ली और वे उन्होंने उन गणधरों के ही शिष्य बना दिये उन गणधरों का वर्णन भी कल्पसूत्र में है उन्हीं में पाचवें गणधर सुधर्म स्वामी थे और सब गणधरों का परिवार भी उन को ही प्राप्त हुआ क्योंकि नवगणधर तो महावीर प्रभुके सामने ही मोक्ष को प्राप्त हो गये थे केवल सुधर्म स्वामी ही शेष रहे थे। इन्द्रभूति महावीर प्रभु का निर्वाण ७२ वर्ष की अवस्थामें पावा पुरीमें हुआ है । कार्त्ति-की अमावस्या जिसको आजकल दिवाली कहते हैं उसके अगले

दिन प्रातःकाल के समय सबसे बड़े इन्द्रभूति जी को कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ है कैवल्यज्ञानी शिष्य परम्परा की खटपटमें कम पड़ते हैं यदि कोई शिष्य होता भी है तो उपदेश देकर स्थविरों को देदेते हैं इस लिये गौतम इन्द्रभूति जी ने शिष्य परम्परा नहीं ली थी।

स्थिविर की व्याख्या

(१) ६० वर्षकी अवस्था वाला वयःस्थिविर कहा जाता है।

(२) जिसको दीक्षा लिये २० वर्ष हो जाते हैं वह चारित्र्य पर्याय स्थिविर कहा जाता है।

(३) सब सूत्र सिद्धान्त ६ दर्शन को पठन करके जो पण्डित हुआ है वह ज्ञानस्थिविर कहा जाता है।

इन तीनों प्रकार के स्थिविरों में ज्ञान स्थिविर चाहे अवस्था में छोटा हो किन्तु ज्ञानस्थिविर श्रुतज्ञानी ही को वह अधिकार मिलता है।

सुधर्मा स्वामी ने महावीर प्रभु के समीप उपदेश सुन कर उस ग्रन्थकी रचना की थी जो आगम नामसे प्रसिद्ध है पाक्षिक सूत्र में उन सबके नाम हैं उनको चतुर्दशी के दिन प्रत्येक साधु गुरु के सम्मुख उच्चारण करता है और उनके पढ़ने में यदि प्रमाद होजाता है तो क्षमा मांगनी पड़ती है सार यह हुवा कि अपनी योग्यतानुसार सब साधु शिष्यों को उस ग्रन्थ के पढ़ने की आवश्यकता है।

आगमों में आचारांग वगैरह ११ अंग हैं उसमें अंतिम अंग दृष्टिवाद है उसमें चोदह पर्वभी शामिल हैं उन पर्वों में से और

दशाश्रुत स्कन्धमें से कल्पसूत्र का भद्रबाहूजी ने उद्धार किया है

सुधर्मा स्वामी के शिष्य जंबु स्वामी हुए वह बाल काल से ब्रह्मचारी होनेके कारण अधिक प्रख्यात हैं। उस समयतक कैवल्य ज्ञान रहा था तथा उन के बाद संभव स्वामी हुवे उन के बाद शय्यंभव सूरि और उन के बाद यशोभद्र सूरि उन के बाद संभूतिविजय उनके बाद भद्रबाहु हुए यहांतक संपूर्ण श्रुत ज्ञान रहाथातथा सिद्धांत ग्रन्थोंके बलसे सब अधिकार वे कहसक्ते थे भद्रबाहू ने कल्पसूत्र की रचनाकी है जिससे वह सर्वमान्य हैं उन को सवा दो हजार वर्ष होगये हैं तो भी इस की भाषा में फेर फार नहीं हुआ है और भाषा इतनी सरल है कि आज संस्कृत व्याकरणका ज्ञाता उसको भली भाँति समझ सक्ता है उसका पहिला सूत्र नवकार मंत्र के बाद यह है।

"तेणं कालेणं तेणं समयेणं समणे भगवन् महावीरे पंच हत्थुत्तरे होत्थ"

अर्थात् वीर प्रभुकी पांच मुख्य बातें जिसके हस्तनक्षत्र अनन्तर है उस उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में हुई थीं। च्यवन, गर्भापहार, जन्म, दीक्षा, कैवल्यज्ञान। और स्वाति नक्षत्र में मोक्ष हुआ है वह दूसरे सूत्रमें है।

कल्पसूत्र मूल भी छपा है भीम सिंह माणिक बम्बई भात बाज़ार में मिलता है मू० १) एक रुपया है और देवचन्द लाल भाई के ज्ञानोत्तेजक फन्ड से छपा हुआ ॥) मिलता है और प्रत्येक साधुके पास किंवा प्रत्येक भंडारमें कल्पसूत्र की लिखी हुई प्रति रहती है उस में सुनेरी चित्र भी होते हैं और सुनेरी स्याही से लिखी हुई सारी प्रति भी देखने में आती है।

जैन ग्रन्थ लिखने का मुख्य प्रचार प्रायः महावीर प्रभु के ९८० वर्ष बाद याद करनेकी शक्ति घट जानेसे प्रारम्भ हुआ है कल्प-सूत्र भी उसी समय लिखा गया था उस समय की प्रतियें अब भी ताड़पत्र पर लिखी हुई जैसलमेर खंबात पट्टण के भंडार में देखने में आती हैं।

कल्पसूत्र के साथ उस की कल्प सुबोधिका टीका भी छपी है ६) रुपये में हीरालाल हंसराज जामनगर और बारह आने में देवचन्द लालभाई सुरत से मिलती है।

जो स्थिविरावली, (स्थविर आचार्य) महावीर प्रभुके बाद हुई है उसका इतिहास सूत्र लिखने वाले देवर्द्धिक्षमाश्रमण का लिखा हुआ उसमें है और साधुओं की समाचारी प्रायः चौमासे में कैसी होनी चाहिये यह अंत में दी हुई है वह उस से पहिली बनी हुई है और उस समाचारीके अंतमें यह लिखा हुआ है कि इस कल्प सूत्र के पठन करने वाला भव्यात्मा हो जाता है और उसी जन्म किंवा दूसरे तीसरे अथवा आठवें जन्म तक अवश्य मोक्ष पाता है।

आज जो लोग जैन को बौधकी शाखा कहते हैं उन सबसे प्रार्थना है कि वे इस ग्रंथको ज़रूर पढ़ें और २४ तीर्थंकरों का समयज्ञान मिलावें उससे यह ज्ञात होजायगा कि जैन लोग सब से प्राचीन हैं इतिहास शोधने में बहुत दिन तक प्रयास करने पर भी जो सच्चा सिद्धान्त है वह अनुमान पर निर्णय करना पड़ता है फिर भी बहुत से शंका स्थान रह जाते हैं परञ्च इस कल्प-सूत्र के अकेले के पढ़नेसे ही वह प्रकाश होजाता है कि कुछ भी

शङ्का बाकी नहीं रहती क्यों कि जैनों की गिनती परार्ध से नहीं होती किंतु जिससे आज के गिनने वाले थक जायें ऐसी शिष्य प्रहेलिका की गिनती से है और उसके बाद असंख्यात नामसे है और पहिले और अंतिम तीर्थंकर ने अंतर बताने के लिये इस गिनती से संख्या मंद बुद्धियोंके समझमें न आवेगी और वे भ्रम में पड़ जावेंगे इस लिये सागरोपम की गिनतीसे ली है एक महासागर में पानी के जितने कण हैं इतने वर्षों का एक सागरोपम होता है एक क्रोड़ को एक क्रोड़ से गुने उसे क्रोड़ाक्रोड़ि कहते हैं एक क्रोड़ाक्रोड़ि सागरोपम में ४२०००वर्ष कम प्रथम अंतिम तीर्थंकर का अंतर है। जैनिओं में रामायण महाभारत का काल निर्णय भी कल्पसूत्र से ही होता है। महावीर प्रभु के २५० वर्ष पहिले पारसनाथ हुए थे उनके ८४००० वर्ष पहिले नेमिनाथ हुए थे जिनके समय में कृष्ण भी हुए हैं उन के हीसमय में युधिष्ठिर हुए हैं जिन को लोग ५००० वर्ष बता कर ही बैठ रहे हैं और इसी प्रकार यह लोग राम का भी काल निर्णय नहीं करसके हैं केवल महिमा ही गाते हैं उन राम के विषय में कल्पसूत्र से निर्णय होता है क्योंकि २० वें तीर्थंकर मुनि सुव्रतके समय में राम हुये हैं और मुनि सुव्रत और महावीर के बीच में ११८४००० वर्षका अन्तर है।

भरत क्षेत्र में जो विद्याकौशल चला है वह किस ने और कहां पहिले प्रकट किया यह भी कल्पसूत्र से ज्ञान होता है क्यों कि जैनों के पहिले तीर्थंकर ऋषभदेव ने पुरुष की ७१ कला स्त्री की ६४ कला जातियों के शिल्प कार्य बताये हैं उस

ऋषभदेव का समय पूर्व में बताया है कि १ कोड़ाकोड़ि सागरोपम में ४२००० वर्ष कम वर्ष पहिले ऋषभदेव मोक्षमें गये हैं प्रथम राजा प्रथम शिक्षक प्रथम विवाह प्रचलित करने वाले प्रथम साधु प्रथम कैवल्य ज्ञान पाने वाले वह थे इसी से आदिनाथ नाम से भी प्रसिद्ध हैं भारत में जो पहिली नगरी बसीहै वह भी बिनीता नगरीथी जो आज अयोध्या नाम से प्रसिद्ध है वह अयोध्या नगरी उन्हों ने ही बसाई थी और उस के बसाने में देवोंने सहायता की थी और उसके पहिले जो मनुष्य थे उनको युगलिक कहते थे भारतवर्ष में उन युगलिक मनुष्योंको खाने के लिये बनस्पति (पड़ों) में सब पदार्थ उनके योग्य मिलजाते थे उस से उन वृक्षों का नाम कल्पवृक्ष कहा जाता था।

उन युगलिकों में क्लेश कम होने के कारण और कामांधता तथा मोह दृष्टि न होने के कारण दूसरे की औरत सामने देखने का भी शक न था एक मातापिताओं के एक युगलिक (दो बच्चे) साथ जन्म लेतेथे वह ही योग्य समय पर संबंध करते थे ऋषभदेवके समय काल पलटने से लोगों की मति भ्रष्ट हुई तृष्णा बढ़ी और आपस में क्लेश होने लगा तब वे सब मिलकर ऋषभदेवके बाप नाभिकुलकरके पास गये और कहाकि हमारे लियेएक राजा बनाओ नाभिकुलकर ने ऋषभदेवको राज्यासन पर बैठा दिया। उस ऋषभदेव ने राज्यासन पर बैठकर विवाह का रिवाज शुरू किया और कलाएं भी बनाईं वह सब अधिकार कल्पसूत्र में है लिखने की लिपिएं व्याकरण काव्य अलंकार कोश सब उन्होंने बनाये इससे उनको प्रजापति

कहने लगे ब्रह्मतत्वको जानने वाले थे इस लिये ब्रह्मा भी कहलाये सब कलाएं निर्माण करनेसे विधाता भी कहलाने लगे कुम्भार प्रजापति जो कहा जाता है उससे भी वही मतलब है कि उन्होंने पहिला कुम्भारका धंधा बनाया था चारमुख वाले ब्रह्मा क्यों कहलाये उस का कारण भी उससे मालूम होता है जब उन्होंने धर्मोपदेश दिया तोएक दिशामें उनका मुंह आनेसे तीन दिशा में बैठने वालेको विमुख होना पड़ता इस लिये तीन दिशा में उसके सदृश मूर्ति देवतों ने बैठाई थीं, सब लोगों का आकर्षण होवे इस लिये बाजे भी मनोहर बजाते थे जैसे आज प्रदर्शनी मेंआकर्षित करने को उत्तम दृश्य रक्खे जाते हैं ऐसे ही देवतों ने भी सब की दृष्टि खींचने को मनोहर दृश्य बनाये थे इस के लिये नीचेका श्लोक जैनी पढते हैं।

अशोकबृक्षः सुरपुष्पवृष्टि
र्दिंव्यध्वनिश्चामरमासनंच।
भामंडलं दुदुंभिरातपत्रं
सत्प्रतिहार्याणि जिनेश्वराणां (१)

और जो चौतीश अतिशय हैं वह उसी समय प्रकट हुए थे जिनमें चार जन्म से ही तीर्थंकरो में होते हैं ११ कैवल्य ज्ञान प्रकट होने पर और १६ देवता करते हैं।

ऋषभदेव ने भरत को दीक्षाके समय राज्य दिया था ऐसे ही और ६६ पुत्रों को भी और २ देश दिये।

देशों के नाम

ऋषभदेव के जो सौ पुत्र थे उनको उन्होंने जमीन दी

और उस पर उन्हों ने खेती विद्या लेखन युद्ध वगैरह के लिये योग्य अस्त्र शस्त्र बनाये। उन्होंने जो जो देश आबाद किये, उनमें जो देश जिसने आबाद किया उसीके नामसे उस देशका नाम पड़ा जैसे कुरु नामक पुत्रसे कुरु देश हुआ अङ्गबङ्ग इत्यादि नाम वालों से बङ्ग देश इत्यादि नाम हुए जो आज तक विद्यमानहैं यद्यपि मुसलमान आदियों ने बहुत देशों और शहरों के नाम बदल दिये हैं तौभी कितने ही नाम आजतक वही विद्यमान हैं

आर्य अनार्य

जो लोग ऐसा मानते हैं कि पहिले इस देश में आर्य न थे किन्तु और लोग रहते थे यह कहना उन का बिल्कुल झूठा है न टीबेट से आर्य आये न तातार से आये किन्तु सब से मुख्य पहिली नगरी अयोध्या [विनीता] थी और उस देश का नाम जिस में अयोध्या है कोशल था और वहां ही ऋषभदेव राज्य करते थे उन्हीं के पुत्र वहां से निकलकर पिता की आज्ञानुसार भारत वर्ष के दूसरे देशों में गये हैं वही आर्यों का पहिलास्थान है। आज जो लोग हिंदुस्तानको सिन्धु और गङ्गाके बीचमें गिनतेहैं वह उनकी भूलहै भारतवर्षमें ३२०००देश हैं जिसमें केवल२५॥ देश आर्य कहलाते हैं बाकीको अनार्य कहतेहैं जहां सदाचार धर्म-प्रेम ईश्वरभक्ति परोपकार विद्या ज्यादा होवें वह आर्यक्षेत्र है और वे गुण जहां कम देखनेमें आवें वह अनार्य क्षेत्र है और आज कल जो पश्चिम में विद्या का प्रकाश है वह यहां से ही गया हुआ है वह सब वर्णन कल्पसूत्र में है।

इक्ष्वाकु सूर्यवंश चन्द्रवंश

कितने लोग कहते हैं कि अमुक वंशकी उत्पत्ति अमुकदेव से हुई है यह जैनी नहीं मानते क्योंकि ईक्ष्वाकु वंश की उत्पत्ति ऋषभदेवके समयमें हुई है और उनके पुत्र सूर्ययशसे सूर्यवंशीहुए हैं और चन्द्रयशसे चन्द्रवंशीहुए सार यह है कि कल्पसूत्रका जब तक पूरा प्रचार आमलोगोंमें न होवेगा और अपनाही ग्रन्थ मानकर जब तक वैदिक ब्राह्मण न देखेंगे तब तक उन को अंग्रेज़ों के अनुमानपर ही जो सत्य असत्य बात वे कहतेहैं अथवा पौराणिक ब्राह्मणों के पुराणों के अलङ्कार के गपों पर ही आधार रखना पड़ेगा।

जैनियों का प्रलयकाल

सत्य, द्वापर, त्रेता, कलि इस प्रकार चारयुग जैनेतर लोग मानते हैं ऐसेही जैनी बारह आरे का एक चक्र मानते हैं जब ऋषभदेव हुए थे वह तीसरे आरेका समय था जब महावीर हुवे हैं वहचौथे आरेका समयथा जबआचार्य भद्रबाहु हुवे हैं वहपांचवें आरेका समय है छठे आरेके समयमें पृथिवीका प्रलय होगा और २१००० वर्ष ऐसाही रहेगा फिर धीरे धीरे पृथ्वी आबाद होगी और फिर तीर्थंकर होंगे फिर धर्मोपदेश शुरु होगा जैनिओं में एक और विशेषताहै कि जैसे और लोग प्रलयमें सब चीजों का नाश मानते हैं इस प्रकार जैनियों के यहां प्रलय में सर्वथा किसी चीज का नाश नहीं होता किंतु बीज मात्र सब रहते हैं और अनुकूल संयोग मिलनेसे फिर वृद्धि होतीहै जो लोग आज कल वानर से मनुष्य की उत्पत्ति मानते हैं अथवा विना माता

पिता के पुत्रोत्पत्ति मानते हैं वह जैसी असंभव बात है और हास्य जनक है ऐसी ही तिरस्करणीय भी है किंतु कल्पसूत्र से ज्ञात होता है कि बीज मात्र सब चीज रहती हैं।

ईश्वर कर्तृत्व सिद्ध करने वाले अरूपी से रूपी पदार्थ होना मानते हैं और रूपी ईश्वर मानने वाले साकार ईश्वर का उत्पन्न होना मान कर इनके द्वारा सृष्टिका उत्पन्न होना मानते हैं अथवा सृष्टि को माया जाल मानते हैं और आत्मा को एकांत निर्मल अथवा सृष्टि सदा अनित्य है ऐसा मानते हैं इन सब लोगों को इस कल्पसूत्र से बहुत बोध मिलता है जो कोई धर्म किंवा मंतव्य का कदाग्रह छोड़कर ऐतिहासिक दृष्टिसे उस कल्पसूत्र को देखेगा तो मालूम होगा कि वह सूत्र दुनिया को अनादि सिद्ध करता है और इस जमाने में जो भारत वर्ष में कलाएं दीखती हैं वह करोड़ों के करोड़ों वर्ष पहले की हैं यह बताता है।

जैनीलोग वेदबाह्य हैं यह दूषण अन्य लोग जैनियों को देते हैं वह कल्पसूत्र से दूर होता है मूलसूत्रों से मालूम हाता है कि जो वेद पुराण इतिहास हैं वह पहिले से हैं नाम भी वही हैं अब जैनियों के महावीर प्रभु के विषय में उन का पिता उन की माता से कहता है कि तेरा बेटा चार वेद छै अङ्ग इतिहास पुराण का वेत्ता होगा दूसरों को सिखाने वाला होगा। और जब वे सर्वज्ञ हुए तब वेदपाठी ब्राह्मणों का शंका समाधान वेद पदों से किया है तो बताइये कि जैनी वेदबाह्य कैसे हो सकते हैं? और जैनी वेद से विरुद्ध कैसे हैं? जिस की इच्छा हो यदि वह अंग्रेजी वा गुजराती मागधी वा संस्कृत पढ़े हों तो शीघ्र मंगाकर खुशीसे पढ़ें। हिन्दीका भी काव्य भाषांतर राजा

शिवप्रसाद जैनी बनारस वाले ने रायचन्द कवि के पास तैयार करा कर छपाया है उस के देखने से भी बहुत कुछ मालूम हो जाता है किन्तु जब तक विद्या के प्रेमी मूलग्रन्थ जो सरल मागधी में है वह न देखेंगे तब तक उन का विश्वास पूरा न होगा इस लिए संस्कृत का थोड़ा भी व्याकरण पढ़ने वाले उस ग्रन्थ को ज़रूर देखें और मालूम करें कि जैनी वेदबाह्य कैसे हो सक्ते हैं ? किन्तु यह बात अवश्य है जो वेद में आज हिंसा का भाग देख कर दया प्रेमिओं को घृणा होती है ऐसे ही घृणा जनक हिंसक भाग प्रवेश होने से किसी जमाने में जैनों ने वेद अमान्य करा होगा।

जैनियों में आर्य शब्द का प्रयोग

जो संस्कृत पढ़े हुए थे वह मागधीके भी पंडितथे संसार विरक्त थे और साधुओं के नायक थे उनके साथ आर्य शब्द जोड़ा जाता था जिस का मागधी में अज्जा शब्द बनता है जितने आचार्यों के नाम मागधी कल्पसूत्र में भगवान् महावीर से पीछे के हैं उन के साथ अज्जा शब्द प्रचलित है किन्तु उत्तम गुण धारण करे विना जो आर्य शब्द अपने साथ जोड़ देना है वह एक असमन्जस बात है और अयोग्यता-सूचक है यह ध्यान रखना चाहिये।

सृष्टि की उत्पत्ति

न ब्रह्मा सृष्टि बनाता है न शिव संहार करता है न विष्णु पालन करता है न ब्रह्मा नाभि कमल से उत्पन्न होता है इस विषय में कल्पसूत्र साफ़ साफ़ बताता है कि नाभि कुल करके घर उन्हों ने जन्म लिया और लोगों को कलायें जरूरी होनेके कारण सिखाईं इस से ब्रह्मा कहलाने लगे और उन्होंने संसार

छोड़ दिया तो शिव शंकर कल्याण करने वाले कहलाये और जैसे अन्य लोगों में भंगेरु, गंजेरुओं ने भांग गांजा पीना शुरू कर शंकर को भी भांग पीने वाला बताया ऐसे जैनियों ने नहीं माना किन्तु उन्हों ने मुक्तिप्रद शिव को माना है और वह दूषण रहित हैं।

भारत वर्ष के चक्रवर्ति राजा

जैनियों में एक सब से महान् राजा को चक्रवर्ति मानते हैं जिस में पहिला भरत चक्रवर्ती हुआ था वह ऋषभ देव का ही पुत्रथा और सब देशों के राजाओं का राजा था आर्य अनार्य सब उसके क़ब्ज़ेमें थे और उनके साथ युद्धहुआथा यहभी इसकल्प-सूत्रमें वर्णनहै अंतमें भरत ने भी वैराग्य पाकर राज्य छोड़ा उनके वंश में बहुत वर्ष जाने बाद दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ हुए उन के समय में सगर चक्रवर्ती हुआ जिस के साठ हज़ार पुत्र देवताओं ने जला दिये थे इस बात को सुन कर राजा को जो दुःख हुआ उस को दूर करने को इन्द्र ने क्या युक्ति की वह भी ख़ास देखने योग्य है जैनियों में सब से ब्राह्मण अधिक पूजनीय थे राजा लोग उन की बड़ी इज्जत करते थे वे माहण नाम से पुकारे जाते थे जिन का कर्त्तव्य साधुओं के धर्मोपदेश के बाद में सर्वत्र फिर कर गृहस्थों को सदाचारी बनाना था और गृहस्थ के संस्कारोंका कराना भी ब्राह्मणों का कर्त्तव्यथा जब ब्राह्मणों ने जीव हिंसा मिश्रित वेद बनाये उस समय से साधु ब्राह्मणों में परस्पर विरोध हुआ राजाओं के वे पुरोहित थे इस लिये प्रजावर्ग सब उनके क़ब्ज़े में आ गया था किन्तु ब्राह्मणों में भी दो भेद थे एक दया पालक और

दूसरे दयाखण्डक थे उन में से जो दयापक्षी थे वे साधुओं से मिलकर दया प्रचार कराते थे जिससे दया धर्म का सर्वथा नाश नहीं हुआ किंतु एक एक यज्ञ में जो हजारों बकरे मारे जाते थे यह पहिले न था क्योंकि कल्पसूत्र में वह वर्णन नहीं है शांतिनाथ कुंथुनाथ अरनाथ तीन चक्र वर्ती महाराजा स्वयम् तीर्थंकर भी हुवे हैं जिनकी नगरी हस्तिना पुर थी जैनिओं में वह नगर प्रख्यात है क्योंकि ऋषभदेव की साधु होने के बाद पहिली पारणा वहां हुई थी बारह चक्रवर्ती किस के जमाने में हुए यह भी इस कल्पसूत्र से ज्ञात होगा।

वासुदेव।

जैनिओं में चक्रवर्ती से आधी संपदा के मालिकको वासुदेव कहते हैं उनमें पहिला त्रिपृष्ट वासुदेव हुआ था जो महावीर प्रभु का जीव था जिसने अपने शय्यापालक को गहरी रात तक बाजा बजवाने का निषेध करने पर भी बजवाने से उसी समय गरम रांग बनाकर कानमें डलवायाथा वह पापथा उसका फल महावीरके जन्ममें ही कानमें कीला लगनेका भोगनापड़ा वह सब बातें कल्पसूत्र से ज्ञात होती हैं कृष्ण भी वासुदेव थे और नेमिनाथ तीर्थंकर के पिता समुद्र विजय के दश भाइ थे उस में बसुदेव नाम के भाई के पुत्र कृष्ण थे इसीलिये वासुदेव कहाते थे लिखा है कि वो एक सच्चे धर्मात्मा पुरुष थे।

कैलास पहाड़।

जैनियों में अयोध्या से थोड़ी दूर एक पहाड़ बताते हैं जिस का नाम कैलास है उस पर भरत राजा ने २४ तीर्थंकरों के प्रतिबिंब बनाये थे और मनोहर मंदिरमें स्थापन किये थे आज

भी उस गाथा को पढ़ते हैं।

चतारी अट्ठ दसदोय वंदिया जिणवरा चौविस
परमठ निष्ठ अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
जगचिंतामणि जगनाह। जगगुरु जगरख्खण ॥
जग बंधव जग सत्थवाह। जग भावविअ ख्खण ॥
अठावय संठ वियरूप। कमट्ठ विणासण ॥
चउवी संपिजिणवर। जयंतु अप्पडिहयसासण ॥

कैलास का दूसरा नाम अष्टापद है मंदिर बनाने के बाद कोई वहां जाकर मंदिरकी रत्न मय प्रतिमाओंको लोभसे खंडन न कर डाले इस लिये पीछे वहांपर दूसरे राजाने चारों तरफ खाइ खोदकर गंगा का पानी भर दिया था आज कोइ वहां नहीं जा सक्ता किंतु रावन विमान में बैठकर गया थो और उसने ऋषभदेव की प्रतिमा के सामने नृत्य के साथ पत्नी को साथ लेकर भक्ति की थी और स्वयं महावीरके शिष्य गौतम इंद्रभूति तपश्चर्या की लब्धि के बल से वहां गयेथे उस अष्टापद पहाड़ पर ऋषभदेव प्रभुका मोक्ष हुआ है उनकी समाधि अर्थात् अग्निसंस्कार वहां हुआथा वह भी कल्पसूत्र में अधिकार है।

२४ तीर्थंकरों के कितने साधु साध्वी श्रावक श्राविका थीं कितने ज्यादा ज्ञानी कितने ज्यादा तपस्वी कितने विद्यावादी कितने कालतक मोक्ष मार्ग कायम रहा एक तीर्थंकरके बाद दूसरा तीर्थंकर कब हुआ यह भी कल्पसूत्र में हैं नवीन गिनती वालों को उसके समझ ने में पहिले बहुत कठिनता होगी तो भी अभ्यास से वह सब कठिनता मिट जाती है।

भद्रबाहु ।

भद्रबाहु और बराह मिहिर दोनो भाई दक्षिण देशके रहने वाले थे और विद्याविशारद ब्राह्मण थे जब दोनों ने जैनधर्म के वैराग्य तत्वमय धर्मोपदेश सुने उस समय संसारको असार मान कर दीक्षाली और साधु हो गये जैन सिद्धांत सब पढ़लिये और भद्रबाहु की विशेष योग्यता देखकर गुरुमहाराजने भद्रबाहु को आचार्य पदवी दी आज भद्रबाहु किंवा वराहमिहिर को कितने बरस हुए यह कल्पसूत्र से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है बराह-मिहिर को आचार्य पदवी न मिलने से जैनधर्म का वह विरोधी होगया और मरने बाद भी देवयोनि से दुःख देने लगा भद्रबाहु से लोगों ने प्रार्थना की तब उन्होने उवसगाहरंस्तोत्रं बनाकर दिया आज भी जैनी निरंतर उसको पढते हैं क्योंकि इस से वराह मिहिर का विघ्न दूर हुआ था और दूसरे सर्पादिका भी भय दूर होता है ।

मागधी और संस्कृत ।

पहिले लोक भाषा प्रायः मागधी थी यह सब जानते हैं और मागधी से कितनेक शब्द थोड़ा रूपांतर पाकर आज कल की सब भारतवर्ष की भाषाएं हुई हैं गुजराती पंडित अब मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं कि गुजराती की माता मागधी है इस प्रचलित भाषा में तीर्थंकरोंने अपने सब सूत्र बनाये कि थोड़ी बुद्धि वाले शिष्य भी उस को याद करें और समझ लेवें मागधी आजकल प्रचलित न होने के कारण विशेष कठिन भी किसी जगह हो जाती है इस लिये समयज्ञ साधुओंने उस की संस्कृत टीकाएं भी बनादी हैं और गुजराती भाषा

भी बनाली है तो भी ऐसा ख्याल न करना कि जैनी सूत्र सब मागधी में ही हैं किंतु एक बारवां अंग दृष्टिवाद जो सब से बड़ा है उस में एक भाग में चौदह पूरव हैं वह दृष्टिवाद सब से बड़ा ग्रन्थ संस्कृत में है किंतु वह बड़ा होनेसे आचार्योंने नहीं लिखाथा थोड़ा सा भाग मागधी में उद्धृत किया जो आज कल्पसूत्र है किन्तु यह भी मागधी में इस लिये लिखा कि मंद बुद्धि वाले भी शीघ्र उसे समझ लेवें।

भद्रबाहु ने एक ज्योतिष ग्रन्थ भी बनायाहै वह भद्रबाहु-संहिता नाम से प्रसिद्ध है भद्रबाहु विशेष कर नेपाल देश में रहते थे वहां का राजा जैनी था और नेपाल देश पहाड़ पर होने से चमत्कारी विद्यायें प्राप्त करने को और समाधि करने का अच्छा स्थान था।

उन के पास श्रीसंघने ५०० साधु पूर्व विद्या पढ़ने के लिये भेजे थे उनमें से केवल एक स्थूलिभद्र को छोड़ कर शेष सब शिष्य क्रम क्रम से लौट गये और स्थूलिभद्र ही पूरे पढ़े थे उस समय नंद नाम का जैनी राजा पटने में राज्य करता था वह वररुचि ब्राह्मण जिसकी बातें मुद्रा राक्षस में लिखी हैं, उस पर जैनशास्त्र का अधिक प्रकाश पड़ा था उस वररुचि विद्वान् ब्राह्मण का नंद राजा के मन्त्री शकटार ब्राह्मण के साथ झगड़ा हुआ था और राजा ने उस का खून करवाया था उस के दो पुत्र थे एक स्थूलिभद्र वह बड़ा था उस ने बाप की प्रधान पदवी मिलने पर भी इनकार किया कि मैं ऐसे संसार में नहीं फसूंगा जिस में आज राज्याधिकार मिले और कल खून हो वह साधु हो गया श्रीयक छोटे भाई को प्रधान की पदवी मिली शकटार के सात पुत्री थीं वह सातों भी पढ़ी हुई थीं और चाहतीं तो उसका सभा में मान भंग करसकतीं परन्तु वे सातों

वैराग्य पाकर दीक्षा ले भद्रबाहु की संप्रदाय में साध्वियें हुईं जिस की गाथा यह है।

जखाय जखदीना भूयातहचेव भूयाअ।
सयणावेणारेणा भयणीओ थुलिभद्दस्स॥

स्थूलिभद्र और वज्रस्वामी।

भद्रबाहु के शिष्य स्थूलिभद्र शीलव्रतसे अधिक प्रख्यात हैं उन्होंने जिस वेश्या के घर में बारह वर्ष रहकर भोग विलास किया था वहां साध होकर चार मास वर्षाऋतु में रहे किन्तु वेश्या में लिप्त न हुए ऐसा होना बहुत दुर्लभ है।

स्थूलिभद्र के शिष्य प्रशिष्य संप्रदाय में वज्र स्वामी हुए हैं उनका चरित्र भी अधिक माननीय है छोटी उम्र याने दूध पीने के समय में वैराग्य आया तब उन्होंने माका राग छुड़ानेको कृत्रिम ढौंग किया परञ्च साधुहुए और पिताके पास चलेगये और राज्यसभा में माताने बहुत लोभदिया तो भी संसारवासना से विरक्त रहे वह एक जैनसंप्रदाय में ऐसे प्रभाविक पुरुष हुएहैं कि आज तक उनकी पारमार्थिक वृत्ति प्रसिद्ध है। त्यागवृत्ति और ब्रह्मचर्य में इतना ही कहना बस होगा कि एक करोड़पति की कन्याने प्रतिज्ञा की कि मैं तेजस्वी तपस्वी बाल ब्रह्मचारी वज्रस्वामी के साथ अपना विवाह करूंगी कितनेक वर्ष जाने के बाद पिताने उस का विवाह और जगह करना चाहा किंतु कन्या ने स्वीकार न किया वज्रस्वामी देशांतरों में फिरते २ वहां आये और कन्यापिता कन्या को धन के साथ लेजाकर वज्र स्वामी को कन्या देने लगा वज्रस्वामी ने संसार की असारता समझाकर कन्या को वैरागिणी बनादी और उस की दीक्षा के महोत्सव में वह धन लगा दिया

कल्पसूत्र में बौध का नाम भी नहीं है

कल्पसूत्रमें बौधकी बात बिलकुल नहीं है जिससे मालूम होता है कि जैनिओं का उनके साथ कुछ संबंध नहीं अपिच उस समय बुद्ध किंवा उनके अनुयायी कुछ गिनती में भी न थे सिर्फ दो धर्म चल रहे थे एक वैदिक दूसरा जैन क्यों कि महावीरका चरित्र जो कल्पसूत्र में है उस में वैदिक ब्राह्मण और वेद की बहुत चर्चा है और जैनी खास कर बहुत बातो में उन से मिलते थे केवल हिंसक यज्ञ से कुछ विरोध था।

बौध का समाधान

भारत वर्ष में अशोक राजा हुआ वह मगध देश में राज्य करने वाला चंद्रगुप्त का वंशज था वह पहिले वैदिकयज्ञ करने वाला ब्राह्मण था पीछे जैनी हुआ और अंतमें बौधके साधु के पास बौधानुयायी हुआ और समताभाव सब पक्षों पर धारण कर विद्या प्रेम से बौधधर्म से दुनिया भर को लाभ पहुंचाया जिससे बौध धर्म की महिमा भी बढगई कल्पसूत्र में बौधका नाम भी नहीं है यह पता अशोक के लेखके बौध की पाली भाषा में होने से लगा है और यह नहीं जानने वाले भ्रम में पडते हैं।

दिगंबर

जो दिगंबर भाई हमसे किसी विषय में भिन्नता तात्विक दृष्टिसे बाहरी रखते हैं वह कल्पसूत्र अक्षरशः पढेंगे तो ज्ञात होगा कि दिगंबर का भी नाम उसमें नहीं है न श्वेतांबर का नाम है इससे ज्ञात होता है कि भगवान् के निर्वाण बाद ९८०वर्ष तक दिगंबर श्वेतांबर का झगड़ा प्रकट न था धीरे धीरे ज्ञान घटने से स्वार्थप्रिय किंवा अज्ञान अंधकार से घेरे हुए बीचले लोगों ने महावीर के निर्दोष धर्म में शंकास्पद स्थान बना दिया

नहीं तो जो ग्रंथ आज अंग्रेज जर्मन किंवा जैनेतर पढ़ कर बौध से जैन को भिन्न सिद्ध करते हैं तो हमारे यत्किंचित् मंतव्य वाले उस ग्रंथ से विमुख कैसे रहते ?

साधुओं के दश कल्प

१ अचेलूक, २ उद्देशिक, ३ शय्यातर, ४ कृतिकर्म, ५ व्रत, ६ जेष्ठ ७ प्रतिक्रमण, ८ राजपिंड, ९ मासकल्प, १० चतुर्मासीकल्प,

(१) जीर्णप्रायः वस्त्र रखना (२) जो साधु के लिये ही बनाया है वह आहार न लेना (३) जिस के मकान में रहे उस का आहारादि न लेना [४] छोटा साधु बड़े को बंदन करे [५] पांचमहाव्रतपाले [अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, निष्परिग्रहता, यह पांच महाव्रत हैं] (६) दूसरी दीक्षा में जो बड़ा है वह बड़ा कहलावे अर्थात् उम्र किंवा पहली दीक्षाका पर्याय गिनती में नहीं आता (७) यदि कुछ अपना पाप किंवा मलीनता होवे तो उसको प्रकट करना उसका पश्चात्ताप करना गुरु के पास दंड लेना वह प्रति क्रमण है (८) राजाओं का आहारादि न लेना (९) विना खास कारण वर्षाऋतु विना एकजगह एक मास से अधिक न रहना वह मासकल्प है। (१०) चार मास वर्षा ऋतुमें एक जगह रह कर धर्म ध्यान करना वह चतुर्मासी कल्प कहलाता है।

महावीर के चौमासे

महावीर प्रभु ने ३० वर्ष की उम्र में दीक्षा ली और ७२ वर्ष की उम्र में मोक्ष पाया १२ वर्ष तक धर्मोपदेश विन आत्महित के लिये फिरते रहे फिर ३० वर्ष तक कैवल्यज्ञान पाकर सर्वत्र धर्मोपदेश दिया और ४२ चौमासे महावीर प्रभुने कहां किये यह भी वर्णन उसमें आता हैं अनेक नगरियों के जो नाम आते हैं उन

नगरियों में प्रायः आज कोई बिलकुल जीर्ण भी होगई हैं कितनेक के नाम भी बदल गये हैं तो भी जैनी धनाढ्य लोगोंने वहां जाने वालों के आराम के लिये वहां मंदिर धर्मशाला बना रक्खे थे ।

बौधका जोर होने पर बहुत फेर फार हुआ ऐसे ही शंकराचार्य के समय में और मुसलमानों के राज्यमें जैनी मंदिरों का बहुत नुकसान हुआ परंतु जब जैनिओं का जोर किंवा पक्ष होता था कि वहां फिर जीर्णोद्धार अर्थात् नये तौर से मंदिर बनाते थे और अपारद्रव्य लगाते थे जिससे कोई कोई खास तीर्थ छोड़ कर वस्ती कम होने पर भी वहां जैनी के मंदिर विद्यमान हैं ।

महाबीर के समय के जैन राजा

श्रेणिक राजा जो राज ग्रही में राज्य करता था वह परम जैनी था उस के पुत्र के कारण उस का मृत्यु हुआ तो भी वह कोणिक पिता के मरे बाद भी परम जैनी रहा था किन्तु राज्य धानी बदल दी और चंडप्रद्योत वगैरह भी जैनी राजा थे किन्तु महाबीर के अंत समय में ९ काशी देश और ९ कोशल (अयोध्या) के राजा उपस्थित थे उससे ज्ञात होता है कि वह देश बहुत बड़े थे अथवा छोटे छोटे टुकड़े एक एक राज्य के पड़ गये थे आज भी गुजरात काठियावाड़ में ऐसी अनेक छोटी छोटी रियासतें हैं जिस की गवर्नमेन्ट ने एजन्सिआं बनाली हैं ।

महावीर जयंती

अंग्रेजी रीति के अनुसार नये रूप में जयंती का प्रकाश हुआ है किन्तु पूर्व में भी रिवाज था राम नवमी जन्माष्टमी में राम,कृष्णके लिये उत्सव होता था ऐसे ही जैनियोंमें भीभाद्र-

पद शुदि १-२ को जब वह चरित्र कल्पसूत्र से सुनाते थे तब महिमा होती थी थोड़े वरषसे नयी रीतिसे चैत्रशुदि १३केरोज ही महावीर के जन्म के दिन जयंती होने लगी है विद्याप्रचार जहां ज्यादा होता है वहां आजकल महावीर चरित्र कल्पसूत्र के अनुसार सुनाया जाता है।

महावीर का निर्वाण दिन जो कल्पसूत्र में दीवाली की रात्रि का है उस की महिमा भी सर्वत्र दीवाली के रूप से प्रचलित है मूल में लिखा है कि महावीर के मृत्यु (निर्वाण) समय थोड़ी देर तक अंधेरी काली रात्री अधिक भय दायी होने लगी वहां जो लोग उपस्थित थे उन्हों ने १८ राजाओं के साथ दीपक प्रकट किया वहां सूत्र है।

भाव उद्योतकारक महावीर का अभाव है तो द्रव्य उद्योत तो दीपक से करलो वहां दीपक प्रकट किये उसी के अनुसार मसाल माफक दीपक जलाने का रीवाज आज भी जैन वस्ती वाले गुजरात देश में बहुत प्रसिद्ध है।

साधु समाचारी

बारह मास साधु किस प्रकारसे रहते हैं यह सब आचा- रांग वगैरह सूत्रों में लिखा है परन्तु आठ मास में वर्षा कम होती है जिस से छोटे जंतुओं की उत्पत्ति भी कम होती है और चौमासे में वर्षा ज्यादा होने से बहुत से जीवों की उत्पत्ति देखने में आती है जैसे कि काई और कथुएं ऐसे बारीक होते हैं कि जब चले तब जीव मालूम पड़े और स्थित होवे तो जड़ मालूम पड़े इस लिये साधु को जीवरक्षा के लिये बहुत सावधानी रखनी पड़ती है वह सब क़ानून कल्पसूत्र के अंतमें बताये हैं जो साधु अच्छी तरह से पढ़कर समझ कर उस आचार का पालन करता है वह अपना और दूसरों का रक्षक होजाता

है न दूसरे जीवों को पीड़ा देता है और अपने अप्रमाद से अपने को भी बीछु सर्प वगैरह से बचा सकता है।

क्षेत्र के तेरह गुण

गृहस्थ लोग चाहें तो घर में टट्टी जा सकते हैं परंतु साधु को अवश्य खुले मैदान में दूर जाना चाहिये और जहां कादव विशेष हो वहां साधु न रहे इस लिये गुरुमहाराज की आज्ञानुसार क्षेत्र के तेरह गुण देखे जो तेरह गुण वाला क्षेत्र मिले तो वहां चौमासा करे तेरहगुण न मिलें तो चारगुण अवश्य होने चाहियें वह वर्णन भी कल्पसूत्र में हैं।

मागधी भाषा में भद्रबाहु की विद्वत्ता

मागधीभाषा में संस्कृतके अनुसार समास आदि सब हैं जिसको देखना हो वह कल्पसूत्र को पढ़े। महावीर की माता त्रिशलादेवी चौदह स्वप्न देखती है उस में (१) सिंह, (२) हाथी, (३) बैल (४) लक्ष्मीदेवी (५) फूलों की दोमाला (६) सूर्य (७) चंद्रपद्म (८) सरोवर (९) समुद्र (१०) कलश (११) देवविमान (१२) रत्नराशि (१३) अग्निविनाधूम (१४) ध्वज इनका जहां वर्णन है वह सब पढ़जाना चाहिये क्योंकि एक लक्ष्मी देवी के वर्णन में जो निर्दोष व सार रस भरा है वह अद्वितीय है।

आश्चर्य।

जो वस्तु जिस समय में नहीं होती है और वह विना किये उस समय में स्वाभाविक होवे तो लोग उसे आश्चर्य कहते हैं इन्द्रजाल में जो दृश्य मंत्रवादी दिखाता है और दृष्टि खेंचलेता है वह आश्चर्य नहीं हैं किंतु सच्ची बात स्वाभाविक रीति से विरुद्धता को प्राप्त होवे तो वह आश्चर्य कहाता है।

कल्पसूत्र में दश आश्चर्यों का वर्णन आता है उसका वर्णन

कल्पसूत्र में है दिगंबर भाइयों ने उनको अनुचित मान कर कल्पसूत्र को अमान्य कर नये ढंगसे और ग्रंथ पुराण नाम से कोई बनाया होगा अस्तु हमारी विद्वान् इतिहास प्रेमिओं से प्रार्थना है कि जो आजकल असंभवित बात मालूम पड़ती है उस के कारण उस ग्रन्थ को जिसमें वह बात लिखी है अमान्य करें यह ठीक है परन्तु उसकी ऐतिहासिक और उपयोगी बातों का अभ्यास न करना न उनसे जैनियों का प्राचीनत्व बताना यह एक विचारने योग्य बात है।

आज नयी शोध ने पूर्व की बहुत बातों को झूंठी किंवा असंभवित बना दीहै ऐसे ही भविष्यमें जो विद्या बढ़ेगी किंवा घटेगी तो आज की बात उस समय पर झूंठी हो जावेंगी जो आज कल लोग प्रत्यक्ष सच्ची देख रहे हैं।

नयी विद्या वाले पूर्व की सब बातें हांसी में उड़ा कर शास्त्रों की उपेक्षा किंवा अपमान किया करते हैं किन्तु पश्चिम के लोगों को धन्यवाद है कि कल्पसूत्र जैसे ग्रंथ को पढ़ कर विदेशी भाषा में भाषांतर कर और लोगों को भी ज्ञानामृत चखाते हैं।

जीव रक्षा सत्य वचन अस्तेय ब्रह्मचर्य निष्परिग्रहत आदि साधु के २७ गुणों का वर्णन किंवा महावीर प्रभु का चरित्र किंवा तीर्थंकरों का अंतर तो उस में से अवश्य देखना चाहिये जो विद्वान् देखेंगे तो हिंदी भाषामें सरल गद्य भाषांतर भी गुजराती के अनुसार हो सकेगा और दूसरे सूत्रों का भाषांतर और समालोचनाएं भी करनी आवश्यक होंगी और हिंदी के भी प्राचीन साहित्य का सदुपयोग होगा।

अशुद्धि पत्रम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	८.१०	साध	साधु
६	१८	नक्काखेमि	नका॰ वेमि
[illegible]	१८	करंतंपि	नकरंतंपि
६	१६	तस्सभंते	तस्स
७	१३	वैरीथा	वैरीथा उस ने
८	७	३६	३४६
९	१०	यहांतक हुवा कि	वहां तक
१०	७	साथ	राय
१०	१५	बारह	ग्यारह
११	२२	११	१२
११	२३	पर्व	पूर्व
१२	४	संभव	मभवा
१२	८	को सवा	को पायः सवा
१३	१४	हा	हो
१४	२२	७१	७२
१५	७	हा	ही
१६	४	बनाया था	बताया था
१६	४	रूपा	रूपी
१६	१५	हाना	होता
२०	१४=१६	अज्जा	अज्जो
२०	२४	उन्हों	ऋषभदेव
२३	२	चौविस	चौविसं
२३	३	निष्ठ	निट्ठि
२८	३	वाले	भेद वाले
३१	१५	वालश	कलश
३१	१८	वसार	शृंगार
३१	२४	नहा	नहीं
३२	७	ठीक है	ठीक नहीं है
३०	२२	कथुए	कंथुए

सार्वजनिक हित भाग ५ वां

—>o<—

जिस में हिंदुविश्वविद्यालय को उत्तेजन देने के लिये वि
चारें पब्लिक (आम लोगों) को दी हैं एक वार आ
कर पढ़ें मूल्य =) दो आने

प्रसिद्ध कर्त्ता से पत्र व्यवहार करें

कल्पसूत्र की सूची आदि ग्रन्थ मिलने का पता

—>o<—

१ आत्मानंद पुस्तक प्रचारक मंडल नवघरा देहली और आगरा
रोशन मोहल्ला
२ प्रसिद्धकर्त्ता लाला बिहारीलाल गिरीलाल जैन बिनोली
और बड़ौत ज़ि० मेरठ
३ मेरठ आत्मलब्धि पब्लिक जैन लाइब्रेरी
४ देहली आत्मानंद जैन लाइब्रेरी छोटा दरीबा
५ भीमसिंह माणिक जैन बुकसेलर मुम्बई
६ मांडल जैनमित्र मंडल सभा मांडल ज़ि० अहमदाबाद
७ हापुड़ सरस्वती पुस्तकालय
८ देवबंद वर्धमान पुस्तकालय ज़ि० सहारनपुर